ॐ

चैत्यवन्दन सामायिक

हिन्दी भाषान्तर सहित।

मिलनेका पता:-
श्री आत्मानन्द जैन पुस्तकप्रचारक मंडल।
रोशन मुहल्ला, आगरा सिटी।

मूल्य आध आना।

वीर सम्वत २४४४

सन् १९१८ ईस्वी.

विक्रम सं० १९७५

चैत्यवंदन सामायिक विधि

हिन्दी अर्थ सहित—
तथा
श्रावकका नित्य कृत्य।

॥ अथ नमस्कारमंत्र ॥

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥
नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥
मंगलाणां च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

अर्थ—बारह गुणों सहित और चार घाति कर्मके हनने वाले ऐसे अरिहन्त भगवान्को (मेरा) नमस्कार हो। आठ कर्मोंका क्षय करके मोक्षमें पहुंचे हुए अर्थात् आठ गुणोंसे युक्त ऐसे सिद्ध भगवानको (मेरा) नमस्कार हो। छत्तीस गुणोंसे संयुक्त ऐसे आचार्य महाराजको (मेरा) नमस्कार हो। पच्चीस गुणोंवाले उपाध्याय महाराजको (मेरा) नमस्कार हो। (अढ़ाईद्वीप प्रमाण, मनुष्यलोकमें रहे हुए सत्ताईस गुणोंसे शोभित ऐसे मुनिराजोंको (मेरा) नमस्कार हो। ये उपरोक्त पांच (परमेष्ठी) नमस्कार, सर्व पापोंका नाश करने वाले हैं। यह नवकार मंत्र सर्व मंगलोंमें प्रथम मंगल है।

जिनमंदिरमें द्रव्य और भावपूजा करनेकी संक्षेप विधि

श्री जिनमन्दिरमें जाकर द्वारमें प्रवेश करके पहले "निस्सहिः" (सांसारिक सावद्य कार्य छोड़ने रूप) कहना चाहिये।

मन्दिरजीका काम (काज) व कचरा जाला वगैरहकी सम्हाल (स्वयम् करने योग्य हो सो आप करे और अन्यसे कराने योग्य हो सो अन्यसे करावे) दूसरी "निस्सहिः" करके मंदिर कार्य छोड़कर तीन प्रदक्षिणा भगवान्के दाहिनी जीमणी तरफ़से यानी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्रकी आराधनारूप देनी चाहिये।

यदि प्रभुकी अङ्गपूजा करनी हो तो शरीर शुद्धि (शुद्ध छने हुवे जलसे सनान) तथा शुद्ध (उमदा) वस्त्र पहनकर मुखकोश बांधके पीछे तीन प्रदक्षिणा उपरोक्त विधिपूर्वक देकर जिनमन्दिरमें कचरा साफ़कर मयूर पिच्छसे प्रभुकी अङ्गप्रमार्जना करके जीवजंतुकी रक्षा करनी चाहिये।

भगवान्की डावी बाजू धूप खेवना, तथा दाहिनी बाजू घृतका फानसमें दीपक करना चाहिये।

'पंचामृत'*से प्रक्षालकर शुद्ध जलसे स्नान कराके तीन अङ्गलूहणा करके केसर-चंदन बराससे नव अङ्गपूजा'× करनी पीछे शुद्ध पंचवर्णके पुष्प चढ़ाकर हार और मुकुट कुंडल आभूषण अङ्गरचनादि धारण कराना चाहिये।

---

* दूध, दधि, घृत, शक्कर, जल, पंचामृत कहा जाता है।
× २ चरण, २ घूटन, २ पोंचे, २ खंवे, (कंधे) मस्तक, ललाट, कंठ, हृदय, और नाभि, यह नौ अंग गिने जाते हैं।

अष्ट द्रव्य* आदिसे अग्र पूजा करके आरती मङ्गलदीपक उतारकर पीछे चतुर्गति निवारणरूप चावलका स्वस्तिक (साथिया) करके ऊपर सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र रूप तीन पुंज (ढगली) बनाकर ऊपर चन्द्राकार सिद्ध शिला बनाकर सिद्धरूप ढगली उसके ऊपर करके फल चढ़ाना चाहिये।

तीसरी "निस्सहिः" कहके भाव पूजा करनी यानी मन, वचन, और कायारूप तीन खमासमणा करना।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मथ्थएण वंदामि ॥

(विधि) यह मन, वचन, कायारूप तीनवार खमासमणा देकर स्त्रीको भगवान्के बांई (डावी) तरफ पुरुषको दाहिनी (जीमणी) बाजु डाबा गोडा ऊंचा कर बैठके विधिपूर्वक चैत्यवंदन करना।

अर्थ—हे क्षमाश्रमण! मैं पाप व्यापारका निषेध करके शरीरकी शक्तिसे आपके चरण कमलोंमें इच्छा करके नमस्कार करता हूँ—मस्तकसे वंदना करता हूँ।

विधि—यह पाठ वीतराग देव और गुरु महाराजके सम्मुख खड़े हो दोनों हाथ जोड़ पंचांग (दो हाथ, दो घुटने और पांचवां मस्तक) जमीनसे लगाकर वंदना करनेका है।

---

*नवण (जल) विलेपन, कुसुम,(पुष्प) धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, और फल, यह अष्ट द्रव्य हैं।

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं इच्छं ।

विधि–(एसा आदेश लेकर डावा गोडा ऊंचा कर बैठके)

जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ।
जगबंधव जगसथ्थवाह जगभाव विअक्खण ॥
अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठ विणासण । चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडि हयसासण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्म भूमिहिं । पढम संघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलीण कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुंकोडिहिं वरनाण समणह कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥
जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहुनेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरूअच्छहिं मुणिसुव्वय मुहरिपास दुह दुरिअखंडण, अवर विदेहिंतिथ्थयरा ॥ चिहुंदिसि विदिसि जिंकेवि तीआणागयसंपइअ ॥ वंदुं जिण सव्वेवि ॥३॥
सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥
बत्तीसयबासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥
पनरस कोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस्स असियाइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

(नोट)-इसके बदले और भी चैत्यवंदन इच्छा होवे सो बोल सकते हैं।

अर्थ—जगको अर्थात् भव्यजीवोंको मन इच्छित पदार्थ देते हैं इस लिए प्रभु चिंतामणि रत्न समान हैं। धर्म रहित भव्यजीवोंको धर्ममें लगानेसे तथा धर्मवालोंके धर्मकी रक्षा करनेसे प्रभु नाथ हैं। हितोपदेश देते हैं इसलिए प्रभु गुरु-(बड़े) हैं। षट्कायके जीवोंकी रक्षा करनेसे प्रभु रक्षक हैं। सब जीवोंका हित चिंतवन करनेसे प्रभु भाईके समान हैं। भव्यजीवोंको निरुपद्रवपणे मोक्ष नगर पहुंचाते हैं। इसलिए प्रभु सार्थवाह हैं। तीन लोकमें रहे हुए नव तत्त्वादि पदार्थोंको केवलज्ञान द्वारा अच्छीतरह समझाते हैं, इसलिए प्रभु विचक्षण हैं। जिन्होंकी मूर्त्तियें भरत राजाने अष्टापद पर्वत ऊपर स्थापन की है, जिन्होंने आठों ही कर्मोंका नाश किया है और जिन्होंकी शासन-शिक्षाकों कोई भी नहीं हरण कर सकता हैं ऐसे ऋषभदेवादि चौवीस जिनेश्वर जयवंता वर्त्तो ॥ १ ॥ जिस भूमिमें राज सता, व्यापार और खेतीवाडी आदि कर्म करनेके साधन हैं ऐसी पांच भरत, पांच ऐरवत और पांच महाविदेह, इन पंद्रह कर्म भूमियोंमें पहेले संघयणवाले-जिसको वज्रऋषभनाराच कहते हैं और जिसके बराबर और कोई शरीर मजबूत तथा ताकतवर नहीं हो सकता है ऐसे शरीरवाले-उत्कृष्ट यानी ज्यादहमें ज्यादह ऐकसो सत्तर जिनेश्वर, नवक्रोड़ केवलज्ञानी, और नव हजार क्रोड़ साधु पूर्वकालमें-श्री अजितनाथजीके समयमें-विचरते प्राप्त होते थे, यह बात जिनागमसे मालूम होती है। आजकलके समयमें बीस जिनेश्वर, दो क्रोड़ केवलज्ञानी, और दो हजार क्रोड़

साधु इन्होंकी हमेशा सुबहके वक्त स्तुति करते हैं ॥ २ ॥ शत्रुंजयतीर्थपर श्रीऋषभदेव स्वामी जयवंता वर्त्तो। (उज्जित)गिरनार-तीर्थपर श्री नेमनाथ स्वामी जयवंता वर्त्तो। सत्य पुरीसाचोरके शोभाभूत श्री महावीरस्वामी जयवंता वर्त्तो। भरूचमें श्री मुनिसु व्रत स्वामी और मुखरी गांवमें श्री पार्श्वनाथ स्वामी यह पांचो ही जिनेश्वर दुःख तथा पापको नाश करनेवाले हैं और भी जैसे कि महाविदेह आदि पांच विदेह, पूर्व आदि चार दिशाएँ, अग्निकोण आदि चार विदिशाएँ और अतीत, अनागत तथा वर्त्तमान इस भवमें जो कोई जिनेश्वर विद्यमान हो उन सब जिनेश्वरोंको मैं वंदना करता हूं ॥ ३ ॥ आठ क्रोड़ छप्पन लाख सत्तागवे हजार बत्तीस सौ व्यासी इतने तीन लोक संबधी मंदिरोंको मैं वंदना करता हूं ॥ ४ ॥ पंद्रह अब्ज बयालीस क्रोड़ अट्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी इतनी शाश्वती जिन प्रतिमाको वंदना करता हूं ॥ ५ ॥

॥ जं किंचि ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

—अर्थ—जो कोई नाम (रूप) तीर्थ हैं, स्वर्गमें, पातालमें, और मनुष्यलोकमें, जो तीर्थङ्करोंके बिंब हैं, उन सबको मैं नमस्कार करता हूँ।

॥ नमुथ्थुणं (शक्रस्तव) ॥

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं त्तिथ्थयराणं सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहथ्थिणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोग हिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नुणं सव्व दरिसिणं सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुण रावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा, जेअ भाविस्संतिणागए काले संपइअवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अर्थ—अरिहन्त भगवानको नमस्कार हो। जो धर्मकी आदि करनेवाले हैं, तीर्थके स्थापन करनेवाले हैं, स्वयंबोध पाने वाले हैं, पुरुषोंमें उत्तम पुंडरिक कमल समान हैं, पुरुषोंमें श्रेष्ठ गंधहस्ति समान हैं, लोकमें उत्तम हैं, लोकके नाथ हैं, लोकका

हित करनेवाले हैं, लोकमें दीपक समान हैं, लोकमें प्रकाश करनेवाले हैं, अभय दान देनेवाले हैं, श्रुतज्ञान रूप चक्षुके देनेवाले हैं, मोक्षमार्गके देनेवाले हैं, शरण देनेवाले हैं, समकित देनेवाले हैं, धर्मके दाता हैं, धर्मके उपदेशक हैं, धर्मके नायक हैं, धर्मके सारथी चारगतिका अन्त करनेवाले श्रेष्ठ धर्म चक्रवर्ती हैं, पीछे नहीं जानेवाले ऐसे उत्तम केवलज्ञान, केवल दर्शनके धारक हैं, जिनकी छद्मस्थावस्था दूर हुई है, रागद्वेषको जीतने और जीतानेवाले हैं, संसारसे तरने और तरानेवाले हैं, तत्त्वके जाननेवाले हैं (तथा) जनानेवाले हैं, कर्मसे मुक्त और मुक्त करानेवाले हैं, सब जाननेवाले हैं, सब देखनेवाले हैं, उपद्रव रहित, निश्चल, निरोग, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध अर्थात् पीड़ा रहित, जो पुनरागमसे रहित हैं, ऐसी सिद्ध गति है नाम जिसका, ऐसे स्थानको प्राप्त किये हुए हैं। उन रागद्वेषके क्षय करनेवालों (और) सब भयादिके जीतनेवालोंको (मेरा) नमस्कार हो। जो अतीत कालमें सिद्ध हुए, जो अनागत-कालमें सिद्ध होंगे (और) जो वर्त्तमानकाल (महाविदेह क्षेत्र)में होते हैं, उन सबको त्रिविध (मन, वचन और काया) से मैं वन्दन करता हूँ।

॥ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

अर्थ—जितने भगवान्के मन्दिर प्रतिमाएं हैं, उर्ध्वलोकमें ... क लोकमें, उन सबको यहाँ रहा

हुआ, वहां जो प्रतिमाएं हैं, उनको मैं वंदन करता हूँ ।

विधि—एक खमासमण देकर आगेका पाठ पढ़ना ।

॥ जावन्त केवि साहु ॥

जावन्त केविसाहु, भरहेरवय महाविदेहेअ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

अर्थ—जितने कोई साधु हैं, पांच भरत, पांच ऐरावत (और) पांच महाविदेह, इन १५ क्षेत्रोंमें, उन सबको (मेरा) नमस्कार हो । (मन, वचन और कायासे) जो तीन दंड (अशुभ मन, वचन और काय) से रहित हैं ।

॥ परमेष्ठि नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

अर्थ—अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व-साधुओंको (मेरा) नमस्कार हो ।

नोट—स्त्रीवर्गको इसके बजाए १ नवकार पढ़ना चाहिये ।

॥ उपसर्गहर (स्तोत्र) स्तवन ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥
तस्सग्गह, रोग, मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि फलो होइ ॥

नरतिरिए सुवि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपाय वब्भहिए॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअसं-
थुओ महायस, भत्तिप्भर निप्भरेण हिअएण ॥ ता
देवादिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

(नोट) इसके बदले यहां दूसरे स्तवन इच्छा हो वैसे बोल सकते हैं।

अर्थ—उपसर्गका हरनेवाला पार्श्व नामका यक्ष सेवक है जिनका, ऐसे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको मैं वन्दन करता हूँ। जो कर्म समुहसे मुक्त हैं, सर्पके विषको अतिशयसे नाश करनेवाले हैं, मंगल कल्याणके घर हैं, विषहर स्फुलिंग मंत्रको जो कोई मनुष्य सदैव कंठमें धारण करता है, उनके दुष्ट ग्रह, रोग, मरकी, दुष्ट ज्वर नाश होते हैं। यह मंत्र तो दूर रहा (किन्तु) आपको किया हुआ नमस्कार भी बहुत फल देता है। मनुष्य, तिर्यंचमें भी जीव दुःख, दरिद्रता नहीं पाते। जो आपका सम्यक्त्वदर्शन पाते हैं, वह (दर्शन) चिन्तामणिरत्न (और) कल्पवृक्ष से भी अधिक है। भव्य जीव अजर अमर स्थानक (मुक्ति) को निर्विघ्नतासे पाते हैं। हे महायश! इस प्रकार यह स्तवना करी। भक्ति समूहसे परिपूर्ण, अन्तःकरणसे हे देव! बोधि बीज जन्म-जन्ममें हे पार्श्वजिनचन्द्र! मुझे दो।

विधि—बादमें और भी कोई स्तवन पढ़ना हो वह पढ़कर, अंगुलियोंको बराबर मिलाकर (जैसे मोती भरी हुई सीप सम्पुट-

होती है इस प्रकारसे) हाथ जोड़ कर मस्तकसें लगाकर "जयवीय-राय" पढ़ना चाहिए।

॥ जयवीयराय ॥

जयवीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठ फल सिद्धि ॥१॥ लोग विरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परथ्थकरणं च ॥ सुह गुरु जोगो तव्वय, ण सेवणा आभवमखंडा*॥२॥ वारिज्जइ जइविनिआ, ण बंधणं वीयराय तुह समए॥ तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि लाभोअ॥ संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याण कारणं॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

विधि—बादमें पैरोंके अंगूठोंके पास चार अंगुलका और एड़ियोंके पास इससे कुछ कम फासला रख कर खड़े होकर हाथोंसे योगमुद्रा साधन करते हुए शेप विधि करना चाहिए।

॥ अरिहन्त चेइयाणं ॥

अरिहन्त चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए,

* यहां तक पढ़कर आगेकी गाथाएं मुख आगे हाथ करके पढ़ना।

सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए, निरुव-सग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए धार-णाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अर्थ —अरिहन्तकी प्रतिमाओंको (वन्दनार्थ) मैं कायोत्सर्ग करता हूँ। वन्दन करनेके निमित्त, पूजन करनेके निमित्त, सत्कार करनेके निमित्त, सम्मान करनेके निमित्त, बोधिलाभके निमित्त, जन्मजरा मरणके उपसर्गोंसे रहित ऐसा मोक्षरूप स्थान पानेके निमित्त, श्रद्धासे. निर्मलबुद्धिसे चितकी स्थिरतासे, धारणासे, बार बार अर्थ-के विचारपूर्वक, चढ़ते हुए भावोंसे काउस्सग्ग (कायोत्सर्ग) करता हूँ।

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं॥ सुहुमेहिं खेल संचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एव माइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्जमे काउस्सग्गो ॥ ३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणंन पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थ—नीचे लिखे हुए आगारोंके अतिरिक्त और जगह काय व्यापारका त्याग करता . ऊपरको श्वास लेनेसे नीचेको

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एव उनके द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

श्वास लेनेसे, खांसी आनेसे, छींक आनेसे, जमाही (बगासी) आनेसे, डकार आनेसे, नीचेकी वायु सरनेसे, चक्कर आनेसे, पित्तके प्रकोपसे मूर्छा आजावे, अंगके सूक्ष्म संचारसे सूक्ष्म थूक अथवा कफ आनेसे सूक्ष्म दृष्टिके संचारसे, इन पूर्वोक्त बारह आगारोंको आदि लेकर अन्य आगारोंसे अखंडित, अविराधित (सम्पूर्ण) मुझे काउस्सग होवे। जहांतक अरिहंत भगवंतको नमस्कार करता हूआ न पारूँ, वहांतक कायाको एक स्थानमें मौन रखकर नवकार आदिके ध्यानमें लीन होनेके लिए आत्माको वोसिराता हूँ।

एक नवकारका कायोत्सर्ग करना चाहिए। काउस्सग्ग पूरा हो जानेपर "नमोअरिहंताणं" कह कर पारना और * नमोऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कह कर नीचे लिखी स्तुति कहनी चाहिए।

॥ कल्लाण कंदं स्तुति ॥

कल्लाण कंदं पढमं जिणंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक्क ठाणं, भत्तीय वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥

(विधी)—इसके बदले दूसरी स्तुति इच्छा हो वैसी बोल सकते हैं।

अर्थ—कल्याणके मूल श्री प्रथम जिनेश्वरको, श्री शान्ति-

---

* (नोट) स्त्रीयोंको यह न कह कर केवल (नमो अरिहंताणं कहके स्तुति कहना चाहिये।

नाथको तथा मुनियोंके इन्द्र श्री नेमिनाथको, त्रिभुवनमें प्रकाश करनेवाले श्री पार्श्वनाथको अच्छे गुणोंके एक अद्वितीय स्थानक ऐसे श्री वर्द्धमान स्वामीको (मैं) भक्तिपूर्वक वन्दना करता हूँ।

(विधि)—पीछे यदि प्रत्याख्यान करना हो तो इच्छामि खमासमणो० पूर्वक नवकारसीसे चउविआहार उपवास पर्यन्त यथाशक्ति पच्चक्खाण करें।

॥ नमुक्कारसहि मुट्ठिसहिका पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नथणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तिआगारेणं वोसिरामि॥

अर्थ—(उग्गए सूरे) सूर्योदयसे दो घड़ी पीछे नम्मुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ नवकार कहके मुठीवालके पारू वहां तक नियम है (यहां नवकार कहके मुठिवालके पच्चक्खाण पारना है इसलिये इसको नोकारसी मुट्ठिसी कहते है।

(मुठिसहिअं)का मतलब यह है के जहां तक पच्चक्खाण पालकर मूठि न खोलुं वहां तक पच्चक्खाण रहे।

चौविहंपि आहारं अशन (अन्न) पाणं (पानी) खाइमं (मेवा दूध आदि) साइमं (पान सोफारी इलायची आदि स्वादिष्ट) इन चार आहारका पच्चक्खाण करनेमें चार प्रकारके आगार कहे हैं।

अन्नथणा भोगेणं (भूलसे अथवा विना उपयोगसे भांगा लगे तो दूषण नहीं]

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम ... ८ एव ७. द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

सहस्सागारेणं (कोई भी कार्य करते अकस्मात् अथवा स्वभाविक मुंहमें कोई चीज आवे तो दूषण नहीं. जैसे के सक्कर तोलते समय उड़कर मुहमें आवे या बरसातकी फुवारे वगेरे ।

महत्तरागारेणं, कोई महत्कार्य उस वृत पच्चक्खाणके फलसे भी अधिक फल देखकर बृहत्पुरषोंके कहनेसे भंग लगे तो दूषण नहीं।

सव्वसमाहिवत्तियागारेणं. कोई बड़ी बीमारीसे असमाधि अथवा सर्पादिके काटनेसे बेहोस (मूर्छित) हो जानेसे दवाई कोई देवे तो दूषण नहीं । गुरुवोसिरे कहे. परन्तु पच्चक्खाण लेनेवालेको वोसिरामी कहना चाहिये । इसके बाद कोई भी स्तोत्र अथवा स्तुतिके श्लोक इच्छा हो तो कहे । बादमें और भी आसपास वहां प्रतिमा विराजमान हो तो जाकर तीन खमासणादि नमस्कार करे ।

त्रिकाल पूजन करना भी शास्त्रमें कहा है सो यथाशक्ती करने योग्य है ।

पीछे तीनवार 'आवस्सहि (इसका मतलब यह कि जो प्रतिज्ञा करी थी उसकी छुट हुई) कहके घंटा बजाते हुए जैनालयसे बाहर जाना चाहिये ।

श्री मंदिरजीमे जघन्यसे १० मध्यम ४२ और उत्कृष्ट ८४ आसातना वर्जना चाहिये ।

दश बड़ी आसातनाके नाम ।

१ तांबूल (पानखाना) २ पानी (जलपीना) ३ भोजन (खाना) ४ उपानह (जोड़ा) ५ मैथुन (कामचेष्टा) ६ शयन (सोना) ७ थूकना (खुखार) ८ मात्रा (पेसाब करनी) याने

लघुनीत ९ उचार (दस्त करना) याने बड़ी नीत १० जुवटे (जुवा खेलना) यानी तास चोपट स्तरंज कोड़ीये पासे वगैरे। हथियार लकड़ीं बूट जोडी आदि वे अदबी की चीजें तथा राजकथा, देशकथा स्त्री कथा, भोजन कथा अर्थात् पापयुक्त वार्तालाप आदि जिनमंदिरमें अवश्य त्यागना चाहिये । ८४ आसातना दूसरे ग्रंथोंसे जान लेनी

॥ गुरु महाराजको वन्दन करनेकी विधि ॥

मन्दिरमें दर्शन करनेके बाद, यदि पंचमहाव्रतोंके धारन करनेवाले, और पांच समिति तिन गुप्ति दशविधयति धर्मके पालन करनेवाले ऐसे निग्रन्थ निस्पृह गुरुका योग हो तो, उनके चरणकमलोंमें वन्दना करनेके लिए जाना, जिसकी विधि नीचे लिखे अनुसार है।

प्रथम दो खमासमण देकर खड़े हो इच्छकारी "सुहराइ०" का पाठ पढ़े।

॥ अथ सुगुरुको सुखसाता पूछना ॥

इच्छाकारि सुहराइ सुहदेवसि. सुखतप, शरीर निराबाध, सुखसंयमयात्रा निर्वहते होजी ? स्वामी साता है जी ? आहार (भक्त) पानीका लाभ देना जी।

अर्थ-इच्छापूर्वक हे गुरुजी ! आप सुखसे रात्रिमें, सुखसे दिनमें, सुखसे तपश्चर्यामें, शरीर सम्बंधी निरोगतामें, सुखसे संयम यात्रा धारण करते होजी ? स्वामी साता है जी ? आहार पानीका लाभ देनाजी और फिर एक खमासमण देकर अब्भुट्ठिओमि पढ़े।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम ... द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

॥ अथ अब्भुट्ठिओ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं? इच्छं खामेमि देवसिअं

विधि—आगेका पाठ पञ्चांग निचे झुकाके दाहीना (जीमना) हाथ नीचे स्थापकर बोलनेका है।

जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे, विणए, वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरीभासाए, जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा बायरंवा। तुब्भेजाणह, अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अर्थ—हे भगवन्! (अपनी) इच्छा करके आदेश दो तो दिवसमें किये हुए अपराधोंको खमानेके लिये मैं खड़ा हुआ हूं। (तब गुरु कहे 'खामेह' अर्थात् खमाओ) फिर आगे कहना कि मैं भी यही चाहता हूँ। दिवस सम्बंधी पापोंको खमाता हुँ जो कोई अप्रीतिभाव, विशेष अप्रीतिभाव उत्पन्न किया हो, आहारमें, पानीमें विनयमें, वैयावृत्तमें, एकबार बोलानेमें, बारम्बार बोलानेमें आपसे उच्च आसन पर बैठनेमें, आपके बराबर आसनपर बैठनेमें, आपके बीचमें बोलनेमें आपकी कही हुई बात विशेषतासे कहनेमें जो कोई मैंने अविनय किया हो, छोटा अथवा बड़ा, आप जानते हैं, मैं नहीं जानता वे मेरे सर्व पाप मिथ्या होवें।

विधि—फिर यदि पचक्खाण करना हो तो एक खमासमण देके खडे होकर गुरु मुखसे लेना चाहिए। और जब घर आवें तो

पंचक्खाणका समय पूरा होनेपर (जैसे नवकारसीका सूर्योदय होनेसे २ घडी पूरी होजावे जब, पोरसीका एक प्रहर होनेपर इसी प्रकार और भी गुरुगमसे जान लेना) मुठी बंद कर तीन नवकार गिनना (जिससे मतलब पंचक्खान पारना है) पीछे मुंहमें अन्नपानी डालना चाहिए।

इति भावार्थ सहित गुरु वंदनविधि समाप्त।

(नोट) सुभेसे दुइपेरतक देवसिअं की जगह राइअं कहना और दुपेरसे रात तक देवसिअं कहना

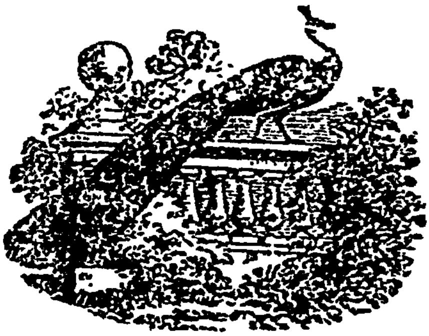

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एवं उ द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

॥ अथसामायिक ॥

संसारि जीव अनादिकालसे भवभ्रममें पड़े रहनेके कारण प्रायः अधिकांश मोक्षप्राप्तिके साधनभूत शुद्ध चारित्रको ग्रहण नहीं कर सकते, अथवा यों कहा जाय कि मनुष्योंका अधिक वर्ग कर्मचक्रके वशीभूत होकर संयम धारण नहीं कर सकता; इस कारण परमोपकारी भगवानने मनुष्य मात्रको प्रतिदिन कमसे कम २ घड़ी (४८ मिनिट) तक "सामायिक" करनेके लिये इस कारण फरमाया है कि, भव्य जीव सामायिकके समय साधुके समान हो जानेसे अपनी शुभ भावनाओंके द्वारा कर्मोंकीनिर्जरा करता हुआ अन्तमें अपनी आत्माका शुद्ध स्वरूप पहचान कर "शिव सुख" की प्राप्ति करे।

सामायिक लेनेकी विधि।

श्रावक श्राविकाओंको सामायिक लेनेसे पहले शुद्ध वस्त्र पहनना चाहिए। और अपने सामने एक ऊंचे आसनपर धार्मिक ग्रंथ या जपमाला आदि रखकर जमीनको साफकर (जीव जन्तुओंको व रजको चरवलादिसे पूंजकर) जो पुस्तकादि रखे हैं, उनसे एक हाथ चार अंगुल दूर आसन (बैठका) बिछाकर और चर्वला, मुहपत्ति लेकर शान्त चित्तसे बैठकर बाएं (डावे) हाथमें मुहपत्ति रखकर सीधे (जीमने) हाथको स्थापन किये हुए ग्रंथादिके सम्मुख उलटा रखके एक नवकारमंत्र पढ़ना चाहिए। बादमें "**पंचिंदिअ संवरणो**" का पाठउच्चारण करें। (जों

---

१ बने वहा तक सामायिक खड़े २ लेना चाहिये।

२ ये संक्षेपमें दिये हुए नामोंके पाठ आगे दिये हुए पाठोंसे जानने चाहिये।

गुरुके स्थापना चार्य हों तो उनके सामने इस पाठके पढ़नेकी आवश्यकता नहीं) पीछे "**इच्छामि खमा समणो**" देकर "**इरिया वही**" "**तस्स उत्तरी**" "**अन्नथ्थ ऊससिएणं**" कहकर एक "**लोगस्स**" अथवा चार "नवकारका कायोत्सर्ग करना चाहिए। काउसग्ग पूर्ण होनेपर "नमो अरिहंताणं" कहकर काउसग्ग पारे और प्रकट लोगस्स कह कर "इच्छामि खमासमणो" कह कर "**इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं**" इस प्रकार कह कर पचास बोल सहित झुके हुए बैठकर मुहपत्तिकी पडिलेहना (प्रतिलेखना) करनी चाहिए। फिर खमासमणा पूर्वक "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं इच्छं" कहे। फिर * "इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सामायिक ठाऊं ? इच्छं" कहकर खड़े हो दोनों हाथको जोड़कर एक नवकार पढ़कर गुरुके सामने इच्छाकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसे कहना चाहिए। फिर गुरु न हो तो अपनेसे जो गुणोंमें बड़ा हो, या जिसने पहिलेसे सामायिक ली हुई हो उनसे 'करेमिभंते' का पाठ उच्चारण करनेके लिए प्रार्थना करनी चाहिए, यदि अपने सिवाय और कोई न हो तो उपरोक्त रीत्यानुसार "करेमिभंते" का

---

* जहां "इच्छामि०" लिखा है वहां—"इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि" यह खमासमणा समझना चाहिए। और जहां "इच्छा०" लिखा हो वहां "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्" ऐसे समझना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एवं उनके द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियां आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

पाठ स्वयं उचर लेना चाहिऐ। फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् बेठणे संदिसाहुं इच्छं " फिर " इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् बेठणे ठाऊ ? इच्छं " फिर "इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सज्झाय संदिसाहु ? इच्छं " फिर इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सज्झाय करूं ? इच्छं " कहनेके पश्चात तीन नवकार पढ़कर दो घड़ी याने ४८ मिनिट तक धर्म ध्यान स्वाध्याय करना चाहिए।

॥ अथ पंचिंदिअ ॥

पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायारपालण समत्थो ॥ पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

इनके बाद खमासणा देना

अर्थ–शरीर, जिह्वा, नाक, आँख और कान इन पांच इन्द्रियोंके तेईस विषय उनके जो दो सो बावन विकार, उनको रोकना ये पांच गुण। तथा नव प्रकारसे शीलव्रतकी गुप्ति धारण करनी ये नौ गुण। क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार कषायोंसे मुक्त होना ये चार गुण। इन उपरोक्त अठारह गुणोंसे

---

१ पासमें चर्वला हो तो सामायिकमें खड़े होना और " करेमि भंते " का पाठ उचारण करना चाहिए, अन्यथा बैठे हुए ही सामायिक लेनी (उचरनी) चाहिए।

सयुक्त, जीव हिंसा न करना, झूठ न बोलना, चोरी न करनी, स्त्री सेवन न करना और परिग्रह न रखना, इन पांच महाव्रतोंसे भूषित ये पांच गुण। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पांच प्रकारके आचार पालन करनेमें समर्थ हों ये पांच गुण। चलनेमें, बोलनेमें, खानेमें पीनेमें चीज़ उठाने रखनेमें, और मल मूत्र परठनेमें विवेकसे कार्य करना, जिसमें किसी जीवका नाश न हो, ये पांच समिति और मन, वचन, कायको वशमें रखना ये तीन गुप्ति इन आठोंको बराबर पालें ये आठ गुण। इन छत्तीस गुणों करके जो युक्त होंवे सो मेरे गुरु हैं।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआएं, मथ्थएण वंदामि ॥ ऐसा कहकर पीछे **इरिया वहि० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ उससिएणं०** तक कहना।

अर्थ–हे क्षमाश्रमण ! मैं पाप व्यवहारका निषेध करके शरीरकी शक्तिसे आपके चरण कमलोंमें इच्छा करके नमस्कार करता हूँ–मस्तकसे वंदना करता हूँ।

विधि–यह पाठ वीतराग देव और गुरु महाराजके और सामायिकके समयमें स्थापनाचार्य जो पुस्तक विगैरे रखा हो उनके सम्मुख खड़े हो दोनों हाथ जोड़ पंचांग (दो हाथ, दो घुटने और पांचवां मस्तक) जमीनसे लगाकर वन्दना करनेका है।

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

॥ अथ इरिया वहियं ॥

इच्छा कारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणा गमणे, ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग पणग दग, मट्टी, मक्कडा, संताणा, संकमणे, ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थ--हे भगवन् ! (अपनी) इच्छापूर्वक आदेश दो (तो) रास्ते चलते जो पाप लगा होवे उससे मैं निवर्तूं ? (तब गुरू कहे पडिक्कमह–निवर्त्तो) आपकी आज्ञा प्रमाण हैं, मैं मेरे मनकी इच्छापूर्वक पापसे निवर्तनेकी इच्छा करता हूँ । मार्गमें चलते जिन जीवोंकी विराधना हुई होवे, जाने आनेमें जो कोई जीव खूंदे, सूके हरे बीज खूंदे, हरी बनस्पति खूंदी, ओसको, चिटियोंके बिलोंको, पांच रंगकी काई–नील फूलन आदिको कच्चे पानीको, सचित्तमिट्टीको, मकडीके जालोंको मसलायाखूंदा, जिन जीवोंकी मैंने विराधना की या दुःख दिया हो, एक इन्द्रियवाले–पृथ्वी, जल, अग्नि वायु

और वनस्पति, दोइन्द्रिय-शंख, जलोक, कृमि, लारीए। ते इन्द्रिय-मांकड, कानखजूरे, जूं, उधइ, कुन्थु मकोडा। चौरिन्द्रिय विच्छु, भ्रमर, मांखी, टीडि, डांस, पञ्चेन्द्रिय-देव, मनुष्य तीर्थचादि सामने आते हुओंको मारे, जमीनके साथ मसले, एक दूसरेको इकट्ठे किये, छूकर दुःख दिया, परिताप दिया, थका कर मुर्दा किये, उपद्रव किया, एक स्थानसे दूसरे स्थान पर रखे, आयुष्यसे चुकाए हों। (इन संबंधी) जो कोई पाप लगा हो वह मेरा निष्फल होवे।

॥ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अर्थ—उस पापको शुद्ध करनेके लिए, उसका प्रायश्चित (आलोयणा) करनेके लिए, आत्माको शुद्ध करनेके लिए, आत्माको शल्य (माया नियाण और मिथ्यात्वसे) रहित करनेके लिए, पाप-कर्मोंका नाश करनेके लिए, मैं कायव्यापारका त्याग करने रूप कायोत्सर्ग करता हूं।

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एवं उनके द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

सुहुमेहिं खेल संचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

विधि—यहां तक कहकर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना पिछे नमो अरिहन्ताणं कहके काउसग्ग पारकर प्रगट लोगस्स कहना— 57/2 (14661)

अर्थ—नीचे लिखे हुए आगारोंसें अतिरिक्त (और) जगह कायव्यापारका त्याग करता हूँ। ऊपरको श्वास लेनेसे, नीचेको श्वास लेनेसे, खांसी आनेसे, छींक आनेसे, जमाही (बगासी) आनेसे, डकार आनेसे, नीचेकी वायु सरनेसे, चक्कर आनेसे, पित्तके प्रकोपसे मूर्छा आजानेसे, अंगके सूक्ष्म संचारसे, सूक्ष्म थूक अथवा कफ आनेसे, सूक्ष्म दृष्टिके संचारसे, इन पूर्वोक्त बारह आगारोंको आदि लेकर अन्य आगारोंसे अखंडित अविराधित (सम्पूर्ण) मुझे काउस्सग होवे। जहांतक अरिहंत भगवंतको नमस्कार करता हुआ न पारूं, वहांतक कायाको एक स्थानमें मौन रखकर, नवकार आदिके ध्यानमें लीन होनेके लिए आत्माको वोसिराता हूं।

॥ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं

च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

विधि—इसके बाद इच्छामि खमा० देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं इच्छं० कहकर मुहपत्ति पड़ीलेहना। इसके बीचमें मुहपत्तिके बोल बोलना।

(मुहपत्ति पडिलेहण विधिके ५० बोल)

१ सूत्रअर्थ तत्त्वकरी सद्दहूं (दृष्टि पडिलेहणा)

२ सम्यक्त्व मोहिनी, मिश्रमोहिनी, मिथ्यात्वमोहिनी परिहरुं।

३ कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं।

(ये छः बोल मुहपत्तिको उल्ट पल्ट करते समय बोलने चाहिये।)

३ सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एवं उनके द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

३ कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं ।

३ ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं ।

३ ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना, चारित्र विराधना परिहरुं ।

३ मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं ।

३ मनदंड, वचनदंड, कायदंड परिहरुं ।

(ये अठारह बोल, बाएं हाथकी हथेलीमें कहने चाहिये)

यहां तकके पच्चीस बोल मुहपत्ति पढिलेनेके हैं ।

नीचेके पच्चीस बोल शरीर पढिलेनेके हैं :—

३ हास्य, रति, अरति परिहरुं (बाईं भुजा पढिलेते)

३ भय, शोक, दुगंछा परिहरुं (दाईं भुजा पढिलेते)

३ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या परिहरुं (ललाटपर)

३ रिद्धिगारव, रसगारव, सातागारव परिहरुं (मुखपर)

३ मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिच्छादंसणशल्य परिहरुं (हृदयपर)

२ क्रोध, मान परिहरूं (बाईभुजाके पीछे) ।

२ माया, लोभ परिहरूं (दाहिनी भुजाके पीछे) ।

३ पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकायकी रक्षा करूं (चर्वलेसे बांए पैर पर) ।

वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायकी यतना करूं (चर्वलेसे दाहिने पैर पर)

इन बोलोंको किस प्रकारसे कहने चाहिये, इसकी विशेष समझ किसी जानकारसे मालूम करना उचित है ।

पुरुषोंको ये ५० बोल ही कहने चाहिए; परन्तु स्त्रियोंको ३ लेश्या, ३ शल्य, और ४ कषाय इन दश बोलोंके सिवाय (विना) ४० ही कहने चाहिए।

फिर खमासणा देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहूं ? 'इच्छं' कहे, फिर इच्छामि खमा० इच्छा० भगवन् सामायिक ठाउं 'इच्छं' कहके खडे होकर दोनो हाथ जोड एक नवकार पढकर इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसा कहकर अपने ही (स्वयं) अथवा गुरुमुखसे करेमि भन्ते उच्चरे या उच्चरावे।

अर्थ—लोकको केवलज्ञान द्वारा उद्योत करनेवाले, धर्म-तीर्थके प्रवर्त्तनेवाले, रागद्वेषको जीतनेवाले, कर्मरूप शत्रुको हनन करनेवालोंकी (मैं) स्तुति करता हूँ जो केवलज्ञानी हैं ऐसे चौवीस तीर्थङ्करादिकी। (१) श्री ऋषभदेव तथा (२) अजितनाथको वन्दन करता हूँ। तथा (३) संभवनाथ (४) अभिनन्दन और (५) सुमतिनाथको (६) पद्मप्रभ (७) सुपार्श्वनाथ तथा राग द्वेष जीतनेवाले चन्द्रप्रभको वन्दन करता हूं। (९) सुविधिनाथ तथा (पुष्पदन्त) ऐसे दो नाम हैं जिनके (१०) शीतलनाथ, (११) श्रेयांसनाथ, तथा (१२) वासुपूज्य स्वामीको (१३) विमलनाथ, (१४) अनन्तनाथको, जो रागद्वेषके जीतनेवाले हैं (१५) धर्मनाथ, (१६) शान्तिनाथको मैं वन्दन करता हूँ। (१७) कुंथुनाथ, (१८) अरनाथ तथा (१९) मल्लिनाथको (२०) मुनिसुव्रतस्वामी (२१) नमिनाथको (२२) अरिष्ट नेमिको मैं वन्दन करता हूं। (२३) पार्श्वनाथ (२४) श्री वर्द्धमान (महावीर)

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं एवं उनके द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

स्वामीको मैं वंदन करता हूँ। इस प्रकारसे मैंने स्तवना की, जिन्होंने कर्मरूप रज मैल दूर किये हैं, जिन्होंने जरा और मरणके दुःख क्षय कर दिये हैं ये चौवीस तीर्थङ्कर रागद्वेषको जीतनेवाले मेरेपर प्रसन्न हो। जिनकी कीर्ति की, वन्दना की, पूजा की, जो लोगोंमें उत्तम सिद्ध भगवान हुए हैं, वे (मुझे) आरोग्यता, समकितका लाभ (और) उत्कृष्ट प्रधान समाधि दें। चन्द्रसमुदायसे अधिकनिर्मल सूर्य समुदायसे अधिक प्रकाश करनेवाले (स्वयंभूरमण) समुद्र जैसे गंभीर, ऐसे सिद्ध परमात्मा मुझे मुक्ति दो।

॥ अथ सामायिकका पच्चक्खाण ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इसके बाद इच्छामिखमासमणो॰ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् वेसणे संदिसाहुं ? ‘ इच्छं ’ इच्छामि खमासमणो॰ इच्छा॰ वेसणे ठाउं इच्छं इच्छामि खमासमणो॰ इच्छा॰ सज्झाय संदि साहुं ? ‘ इच्छं ’ फिर इच्छामि खमासमणो॰ इच्छा॰ सज्झाय करूं ? ‘ इच्छं ’ पीछे तीन नवकार पढ़कर दो घड़ी (४८ मिनिट) तक धर्मध्यान–स्वाध्यायादिक करे पीछे पारे देखो विधिमें।

अर्थ—हे भगवन्त! मैं समतारूप सामायिक करता हूं। पाप सहित जोग (मन, वचन और काय) का त्याग करताहुं। जहां तक उस नियमकी उपासना करूं वहां तक दो कारणसे करना नहीं। तीन योगसे मन, वचन और काय करके न करूंगा और न कराऊंगा, इस बातकी प्रतिज्ञा करके, हे भगवान्! मैं उस पापसे निवृत्त होता हूं। उसकी निंदा करता हूं और गुरुके सामने प्रकट कह कर विशेष निन्दा करता हुआ, उससे आत्माको वोसिराता हूं।

सामायिक पारनेकी विधि।

"इच्छामि खमासमण" कहकर "इरियावही" से लगाकर एक "लोगस्सका काउसग तथा प्रकट लोगस्स" तक कहके "इच्छामिखमा० इच्छा० मुहपत्ति पडिलेहुं इच्छं" कहकर मुहपत्ति पडि लेनेके बाद "इच्छामि खमा० इच्छा० समाइअंपारेमि ? * "यथाशक्ति" फिर इच्छामि खमा० इच्छा० सामायिअंपारिअं" "तहत्ति" इस प्रकार कहकर दक्षिण (दाहिने) हाथको चर्वले या आसन पर रखकर मस्तकको झुकाते हुए एक नवकार मंत्र पढ़कर "सामाइयवयजुत्तो" पढ़े। पीछे × दक्षिण (जिमना) हाथको सीधा स्थापनाचार्यकी तरफ करके एक नवकार पढ़ना चाहिए।

---

* यदि गुरुमहाराजके समक्ष यह विधि की जाय तो "पुणोविकायव्वं" इतना गुरुमहाराजके कहे बाद "यथाशक्ति" कहना। इसी प्रकार दूसरे आदेशमें गुरुमहाराज कहे "आयारो न मोत्तव्वो" इतना कहे बाद "तहत्ति" कहना चाहिए।

× स्थापनाचार्य यदि पुस्तक मालासे स्थापन किये हों तो इसकी आवश्यकता है, अन्य था नहीं।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम ... द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

॥ सामायिक पारनेकी गाथा ॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्ति आवारा ॥ १ ॥ सामाइ अंमिउ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिसे लिया विधिसे पारा । विधि करते जो कोई अविधि हुवा हो वे वह सब मनवचन काय कर मिच्छामि दुक्कडं

अर्थ—पामायिक व्रतसे युक्त जहां तक उस नियमसे सहित हो वहां तक अशुभ कर्मका छेदन करता है। (जितनी वार सामायिक करे उतनी वार) इसलिए सामायिक करते समय साधुके जैसा ही श्रावक भी है। इस कारणसे बहुत वार सामायिक करना चाहिए। सामायिक विधिसे लिया विधिसे पारा, विधि करते जो कुछ अविधि हुई हो वह सब मन, वचन, काय कर मिच्छामि दुक्कडं।

(नोट) "सामायिक विधिमें आए हुए शब्दोंका अर्थ"

इच्छं—आपकी आज्ञा प्रमाण है।

सामायिक संदिसाहुं—मुझे सामायि करनेका आदेश दो।

सामायिक ठाउं—मैं सामायिककी स्थापना करता हूँ।

इच्छकारी भगवन्! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी—हे भगवन्! अपनी इच्छा पूर्वक कृपा करके सामायिक व्रतका पाठ उच्चरावोजी (फरमाइए)

वेठणे संदिसाहुं—मुझे आसनपर वैठनेका आदेश दो ।

वेठणे ठाऊं—मैं आसनपर वैठता हूँ ।

सज्झाय संदिसाहुं—मुझे स्वाध्याय करनेका आदेश दो ।

सज्झाय करुं—मैं स्वाध्याय करता हूं ।

सामाइअं पारेमि—मैं सामायिक पारता हूँ ।

पुणोविकायव्वं—(गुरु कहे) फिर भी करो ।

यथा शक्ति- जैसी मेरी शक्ति होगी ।

सामाइअं पारिअं—मैंने सामायिक पारली

आयारो न मोत्तव्वो (गुरु कहे) आचार (सामायिक) त्यागने योग्य नहीं है ।

तहत्ति—आपका कहना ठीक है ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्—हे भगवन् (अपनी) इच्छापूर्वक आदेश दो ।

इति सामायिक सूत्र हिन्दी अर्थ सहित समाप्त ।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आप अनन्यतम शिष्य हैं ... द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है । उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियां आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं ।